जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जैन

जय जिनेन्द्र

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

विशद
जम्बूस्वामी विधान

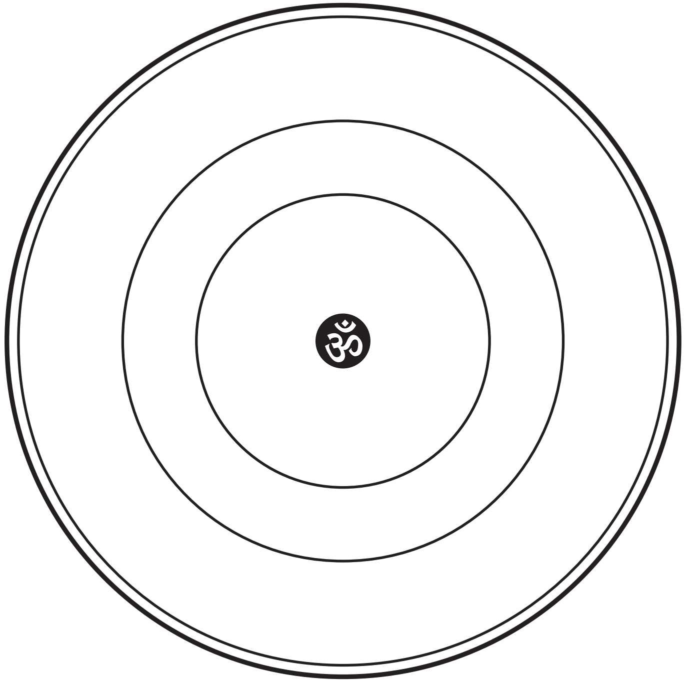

रचयिता : प.पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

कृति – **विशद जम्बूस्वामी विधान**

रचयिता – **प.पू. क्षमामूर्ति साहित्य रत्नाकर आचार्य 108 श्री विशद सागर जी महाराज**

संस्करण – प्रथम, मार्च, 2018

स्थल – दिगम्बर जैन मंदिर, वरूण पथ, मानसरोवर, जयपुर

प्रतियाँ – 1000

संपादन – मुनि 108 श्री विशाल सागर

सम्पर्क सूत्र – 9829127533, 9829076085

प्राप्ति स्थल –
1. जैन सरोवर समिति, निर्मल कुमार गोधा, 2142, निर्मल कुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर, मो.: 9414812008, फोन : 3294018 (आ.)
2. श्री राजेश कुमार जैन ठेकेदार, ए-197, बुधा विहार, अलवर, फोन : 9414016566
3. श्री सरस्वती पेपर स्टोर्स, चांदी की टकसाल, एस.बी.बी.जे. बैंक के नीचे, जयपुर, मो.: 8561023344

पुण्यार्जक –
1. **श्री लोकेश जैन विनय जैन, मनीष, सचिन जैन जैन आयल मिल, खेरतल, मो.: 9414433428**
2. **अनिल कुमार जैन, धरणेन्द्र जैन विद्या पुस्तक भण्डार, हॉप सर्किश, अलवर (राज.) मो.: 9414317931**

मुद्रक – बसंत जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, एस.बी.बी.जे. के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर – मो.: 8561023344

पुनः प्रकाशन सहयोग – मात्र 21.00 रूपये

श्री जम्बूस्वामी का जीवन परिचय

दोहा – जम्बूस्वामी के हृदय, जागा विशद विराग।
संयम के धारी हुए, छोड़ जगत का राग।।

भगवान जम्बूस्वामी का जन्म फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा को राजगृही (बिहार)में हुआ,आपकी माता जिनमती, पिता अर्हदास थे। पुत्र का नाम जम्बूकुमार रखा गया,वह बाल्यावस्था से ही सभी कलाओं में कुशल थे धीरे–धीरे जम्बूकुमार किशोरवस्था को प्राप्त हुये। विवाह योग्य जानकर आपके माता पिता ने नगर श्रेष्ठियों की पुत्री पदमश्री, कनकश्री, विनयश्री, रूपश्री इन चार सुन्दर–सुन्दर कन्याओं के साथ अपने पुत्र के विवाह का निश्चय कर लिया। कुछ समय पश्चात् राजगृही नगरी में सुधर्माचार्य जी संघ सहित पधारे उनके वैराग्यमयी उपदेश को सुनकर जम्बूकुमार ने आचार्य श्री से दीक्षा धारण करने के भाव व्यक्त किये। आचार्य श्री ने माता–पिता की आज्ञा प्राप्त करने को कहा तब जम्बूकुमार माता पिता से आज्ञा लेने आये, यह सुनकर मोही माता पिता दुःखी हो उठे और उन्होंने पुत्र को बहुत समझाया, कहा कि पुत्र हमने श्रेष्ठियों की कन्याओं के साथ तुम्हारा विवाह कराने का वचन दे दिया है।

सेठ अर्हदास ने पुत्र के विवाह न करने की जानकारी उन श्रेष्ठियों को भेजी तो श्रेष्ठियों की कन्याओं ने मन्त्रणा करके अपने पिता से कहा कि जम्बूकुमार हमसे विवाह करके अगले दिन दीक्षा ले लें, जम्बूकुमार ने गुरूजनों के आग्रह को स्वीकार कर लिया और जम्बूकुमार का विवाह सम्पन्न हुआ।रात्रि में जम्बूकुमार का चारों कन्याओं से आपस में संवाद चलता रहा किन्तु जम्बूकुमार उन कन्याओं के मोह–जाल में न फँसे और प्रातः काल होते ही वह सुधर्माचार्य जी से दीक्षा लेने को चल दिये। वैराग्यपूर्ण वचनों को सुनकर उनके माता पिता, चारों रानियाँ एवं उनके घर चोरी करने आये विद्युतकुमार नामक चोर एवं उसके 500 साथियों ने जम्बूकुमार के साथ जिन दीक्षा धारण कर ली।

मुनि जम्बूस्वामी का प्रथम आहार राजगृही नगरी के श्रेष्ठी जिनदास के घर हुआ उसी समय सेठ के आंगन में दान के फल से पाँच अतिशय हुये।

11 वर्ष तक तपश्चरण के पश्चात् संवत्–23 ज्येष्ठ शुक्ला सप्तमी को लगभग 45 वर्ष की अवस्था में केवलज्ञान प्राप्त हुआ उसी दिन आपके गुरू सुधर्माचार्य जी को निर्वाण प्राप्त हुआ, केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् लगभग 40 वर्ष तक विहार करते हुये मुनि जम्बूस्वामी मथुरा नगरी के जम्बू उद्यान में पधारे, इसी पवित्र स्थान से कार्तिक शुक्ला सप्तमी को 84 वर्ष की आयु में मोक्ष प्राप्त किया।

भगवान महावीर की परम्परा में प्रथम अनुबद्ध केवली गौतमस्वामी,द्वितीय केवली सुधर्माचार्य एवं अन्तिम अनुबद्ध केवली श्री जम्बूस्वामी हुए।

क्षेत्र का इतिहास एवं परिचय –

भगवान जम्बूस्वामी को 84 वर्ष की आयु में निर्वाण की प्राप्ति हुई थी, उनकी स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये मथुरा ब्रज क्षेत्र में 84 उपवन, 84 कुण्डों का निर्माण कराया गया। इसी कारण इस पवित्र भूमि को चौरासी का नाम दिया गया। पौराणिक कथाओं के अनुसार रघुवंशी राजा राम के छोटे भाई शत्रुघ्न जी ने मथुरा नामक पुरी की स्थापना की थी जो कि आगे चलकर मथुरा के नाम से प्रसिद्वहुई।

डीग निवासी श्रद्धालु श्रावक श्री जोधराज को स्वप्न आया कि– मथुरा नगर में एक स्थान पर भूगर्भ में श्री जम्बूस्वामी के चरण हैं उन्हें जाकर निकालो और मन्दिर बनवाकर उसमें स्थापित करो। स्वप्न की सत्यता को समझकर वह अनेकों श्रावकों को साथ लेकर उस स्थान पर गये जहाँ श्री जम्बूस्वामी के चरण होने बताये गये थे। उन्होनें भक्ति–भाव से युक्त होकर उस स्थान की खुदाई कराई एवं भगवान जम्बूस्वामी जी के चरण प्राप्त हुये।

मंदिर निर्माता –

जैन श्रावकों के अनुरोध पर मथुरा के धनाढ़्य सेठ श्री लक्ष्मीचन्द्र जी सुपुत्र सेठ मनीराम जी जैन से मन्दिर बनवाने का निवेदन किया। सेठ परिवार ने मन्दिर बनवाने की जिम्मेदारी ले ली। करीब 217 वर्ष पूर्व सन् 1800 में मंदिर का निर्माण प्रारम्भ हुआ तथा सन् 1807 में मंदिर बनकर तैयार हो गया। उसी समय प्राचीन अतिशय युक्त श्री 1008 अजितनाथ भगवान की प्रतिमा ग्वालियर राज्य में भूगर्भ से प्राप्त हुई, सेठ मनीराम जी ने ग्वालियर नरेश से जिन प्रतिमा को मथुरा लाने की स्वीकृति प्राप्त की परन्तु इतनी विशाल प्रतिमा वहाँ से सुरक्षित कैसे आवे? कुछ ही समय बाद मनीराम जी को स्वप्न आया– ''यदि कोई श्रद्धालु श्रावक इसे अकेला उठाकर बैलगाड़ी में रख देगा तो यह प्रतिमा सहज ही मथुरा आ सकेगी'' उन्होंने स्वप्न के बारे में अपने कुटुम्बीजनों को बताया, जिसको सुनकर सेठ लक्ष्मीचन्द जी के सुपुत्र सेठ रघुनाथदास जी, जिनकी जैनधर्म में अटूट श्रद्धा थी शुद्ध वस्त्र पहनकर श्री अजितनाथ भगवान की पूजा की और निरन्तर णमोकार मंत्र का जाप किया एवं भगवान अजितनाथ जी की जय बोलकर अकेले ही अपनी भुजाओं से विशाल प्रतिमा को बैलगाड़ी में रख दिया। मथुरा लाकर महोत्सव पूर्वक मन्दिर में स्थापित कर दिया जो ''मूलनायक अजितनाथ भगवान के रूप में मन्दिर में स्थापित हैं अभिलेख के अनुसार इस मूर्ति की प्रतिष्ठा संवत् 1514 बैसाख सुदी बुधवार को हुई। इस मूर्ति की वीतरागी

छवि अत्यन्त मनोज्ञ है। भगवान श्री अजितनाथ जी की प्रतिमा के सम्मुख श्री जम्बूस्वामी भगवान के चरण स्थापित है जो अति प्राचीन हैं।

मन्दिर जी में और भी 8 वेदियाँ है तथा परिक्रमा मार्ग में 3 वेदी एवं चौबीसी भी निर्मित है दायीं ओर के बरामदे में दो वेदियाँ हैं, एक क्षेत्रपाल जी की और दूसरी पद्मावती देवी की है। मन्दिर जी की पृथक पृथक तीन प्रदक्षिणायें सम्यग्दर्शन, सम्यज्ञान, सम्यक्चारित्र का प्रतीक है।

शान्त सुरम्य वातावरण इस मन्दिर की अपूर्व शोभा है। मंदिर के पीछे पार्क में भव्य जम्बूस्वामी की प्रतिमा भी विराजमान की गई है।

वीर निर्वाण 2544 फाल्गुन की अष्टाह्निका पर्व में परम पूज्य आचार्य श्री **''विशदसागर जी महाराज''** का आगमन हुआ, सिद्धचक्र महामण्डल के अवसर पर श्री अजितनाथ विधान, एवं जम्बूस्वामी विधान की रचना की गयी। जो अत्यंत भावपूर्ण एवं सरल है। जिसको करके आप सभी पुण्यार्जन करें।

श्रमण ज्ञान भारती छात्रावास–

सिद्धक्षेत्र चौरासी पर 11 जुलाई 2001 में स्थापित श्रमण ज्ञान भारती छात्रावास द्वारा पाँच वर्षों में छात्रों को लौकिक शिक्षा में 11 वीं से स्नातक पर्यन्त विज्ञान, वाणिज्य एवं कला संकाय आदि एवं धार्मिक शिक्षा के अन्तर्गत छात्रों कों सिद्धान्त ग्रन्थों, संस्कृत स्तोत्र, प्रतिष्ठा विधि–विधान ज्योतिष आदि की शिक्षा प्रदान की जाती है। यहाँ पर छात्रों को आवास एवं भोजनादि की निःशुल्क व्यवस्था है। संस्थान द्वारा अध्ययन प्राप्त छात्र प्रतिष्ठित कम्पनियों में, सरकारी सेवाओं में एवं सामाजिक संस्थाओं में कार्यरत हैं संस्थान हेतु ज्ञानदान में सहभागी बनकर पुण्यार्जन करें।

संस्था का बैंक खाता ''श्रमण ज्ञान भारती ट्रस्ट, पंजाब नेशनल बैंक शाखा–कृष्णानगर मथुरा में है। खाता सं. 3644000100066679, IFSC CODE-PUNB 0364400 है संस्था को देय दान 80 जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

मथुरा नगर में 4 जिनालय (अजितनाथ, महावीर स्वामी घियामण्डी, घाटी मंदिर, वृन्दावन रोड) पर दो चैत्यालय हैं। तथा वृन्दावन में भी श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर छीपा गली में अत्यन्त प्राचीन है जहाँ आचार्य श्री ससंघ के सान्निध्य में आदिनाथ जयन्ती प्रथम बार मनाई गई एवं प्रतिवर्ष मनाए जाने का संकल्प लिया गया।

अर्चन के सुमन

संसार दुःखों का समूह है। दुःखों से बचने के लिए प्राणी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। यह प्रयत्न कभी अनुकूल तो कभी प्रतिकूल होते हैं। अनुकूल अर्थात् सम्यक् प्रयत्न ही दुःख दूर करने में समर्थ होते हैं। दुःखों का अंतरंगकारण हमारी राग–द्वेष रूप परिणति है एवं बाह्य कारण कर्मोदय है। कर्मोदय के अनुसार अनुकूल–प्रतिकूल निमित्त मिलते रहते हैं और जीव दुःख का वेदन करता रहता है इसलिए कवि ने लिखा है –

संसार में सुख सर्वदा काहूँ को न दीखे।
कोई तन दुखी, कोई मन दुखी, कोई धन दुखी दीखे।।

ऐसी स्थिति में लोगों को जिनधर्म से जुड़कर देव–शास्त्र–गुरु की पूजा,आराधना ही सर्वोपरि है। पुण्य संचय हो और इंसान सुखी और समृद्ध हो एवं सम्यक्त्व को प्राप्त कर परम्परा से रत्नत्रय का आराधन कर मोक्ष प्राप्त कर सके। इस हेतु चिंतन के बिखरे पुष्पों को समेटकर चित्त को चैतन्यता की ओर ले जाने के लिए ज्ञानवारिधि गुरुवर श्री विशदसागर जी महाराज ने 'विशद श्री अजितनाथ एवं जम्बूस्वामी विधान'के माध्यम से शब्द पुंजों को सरल भाषा में संचित किया है। क्योंकि कहते है कि–

प्रभु भक्ति से नूर मिलता है। गमे दिल को सरूर मिलता है।।
जो आता है सच्चे मन से द्वार पर। उसे कुछ न कुछ जरुर मिलता है।।

आचार्य श्री की तपस्तेज सम्पन्न एवं प्रसन्न मुखमुद्रा प्रायः सभी का मन मोह लेती है। आचार्य श्री के कण्ठ में साक्षात् सरस्वती का निवास है। इसे भगवान का वरदान कहें या पूर्व पुण्योदय समझ में नहीं आता। आचार्य श्री को पाकर सारी जैन समाज गौरवान्वित है। आचार्य श्री के द्वारा अब तक 180 विधानों की रचना की जा चुकी है। आचार्य श्री का गुणगान करना तो कदाचित् संभव ही नहीं है। गुरुवर के चरणों में अंतिम यही भावना है कि–

जिनका दर्शन भवि जीवों में, सत् श्रद्धान जगाता हैं
उपदेशामृत जिनका जग में, सद्धर्म की राह दिखाता है।
उन विशद सिन्धु के श्री चरणों में, सादर शीश झुकाते हैं।
हम चलें आपके कदमों पर, यह विशद भावना भाते हैं।।

–**ब्र. आरती दीदी** (संघस्थ आ. विशदसागर जी महाराज)

लघु विनय पाठ

पूजा विधि से पूर्व यह, पढ़ें विनय से पाठ।
धन्य जिनेश्वर देवजी, कर्म नशाए आठ।। 1।।

शिव वनिता के ईश तुम, पाए केवल ज्ञान।
अनन्त चतुष्टय धारते, देते शिव सोपान।। 2।।

पीड़ा हारी लोक में, भव दधि नाशनहार।
ज्ञायक हो त्रयलोक के, शिवपद के दातार।। 3।।

धर्मामृत दायक प्रभो!, तुम हो एक जिनेन्द्र।
चरण कमल में आपके, झुकते विनत शतेन्द्र।। 4।।

भवि जन को भव सिन्धु में, एक आप आधार।
कर्म बन्ध का जीव के, करने वाले क्षार।। 5।।

चरण कमल तव पूजते, विघ्न रोग हो नाश।
भवि जीवों को मोक्ष पथ, करते आप प्रकाश।। 6।।

यह जग स्वारथ से भरा, सदा बढ़ाए राग।
दर्श ज्ञान दे आपका, जग को 'विशद' विराग।। 7।।

एक शरण तुम लोक में, करते भव से पार।
अतः भक्त बन के प्रभो!, आया तुमरे द्वार।। 8।।

मंगल पाठ

मंगल अर्हत् सिद्ध जिन, आचार्योपाध्याय संत।
धर्मागम की अर्चना, से हो भव का अंत।। 9।।

मंगल जिनगृह बिम्ब जिन, भक्ती के आधार।
जिनकी अर्चा कर मिले, मोक्ष महल का द्वार।। 10।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत।।

अथ पूजा पीठिका

ॐ जय जय जय। नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं।
ॐ ह्रीं अनादिमूल मंत्रेभ्योनमः। (पुष्पांजलि क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं, अरिहन्ता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलिपण्णत्तो, धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरिहन्ता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तो, धम्मो लोगुत्तमो।
चत्तारिशरणं पव्वज्जामि, अरिहंतेशरणं पव्वज्जामि, सिद्धेशरणं पव्वज्जामि, साहूशरणं पव्वज्जामि, केवलिपण्णत्तंधम्मं शरणं पव्वज्जामि।

ॐ नमोऽर्हते स्वाहा। (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

शुद्धाशुद्ध अवस्था में कोई, णमोकार को ध्याये।
पूर्ण अमंगल नशे जीव का, मंगलमय हो जाए।
सब पापों का नाशी है जो, मंगल प्रथम कहाए।
विघ्न प्रलय विषनिर्विष शाकिनि, बाधा ना हो पाए।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत।।

अर्घ्यावली

जल गंधाक्षत पुष्पचरू, दीप धूप फल साथ।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य ले, पूज रहे जिन नाथ।।

ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भ-जन्म-तप-ज्ञान निर्वाण पंच कल्याणकेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्व साधूभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्त्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 3।।

ॐ ह्रीं श्रीं द्वादशांगवाणी प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग नमः अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 4।।

ॐ ह्रीं ढाईद्वीप स्थित त्रिऊन नव कोटि मुनि चरणकमलेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।। 5।।

"पूजा प्रतिज्ञा पाठ"

अनेकांत स्याद्वाद के धारी, अनन्त चतुष्टय विद्यावान।
मूल संघ में श्रद्धालू जन, का करने वाले कल्याण।
तीन लोक के ज्ञाता दृष्टा, जग मंगलकारी भगवान।
भाव शुद्धि पाने हे स्वामी, करता हूँ प्रभु का गुणगान।। 1।।
निज स्वभाव विभाव प्रकाशक, श्री जिनेन्द्र हैं क्षेम निधान।
तीन लोकवर्ती द्रव्यों के, विस्तृत ज्ञानी हे भगवान!
हे अर्हन्त! अष्ट द्रव्यों का, पाया मैंने आलम्बन।
होकर के एकाग्रचित्त मैं, पुण्यादिक का करूँ हवन।। 2।।

ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञायै जिनप्रतिमाग्रे पुष्पांजलि क्षिपामि।

"स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषभ अजित सम्भव अभिनन्दन, सुमति पदम सुपार्श्वजिनेश।
चन्द्र पुष्प शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य पूजूँ तीर्थेश।।
विमलानन्त धर्म शांती जिन, कुन्थु अरहमल्ली दें श्रेय।
मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्व प्रभु, वीर के पद में स्वस्ति करेय।।

इति श्री चतुर्विंशति तीर्थंकर स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि।

"परमर्षि स्वस्ति मंगल पाठ"

ऋषिवर ज्ञान ध्यान तप करके, हो जाते हैं ऋद्धीवान।
मूलभेद हैं आठ ऋद्धि के, चौंसठ उत्तर भेद महान।।
बुद्धि ऋद्धि के भेद अठारह, जिनको पाके ऋद्धीवान।
निस्पृह होकर करें साधना, 'विशद' करें स्व पर कल्याण।। 1।।
ऋद्धि विक्रिया ग्यारह भेदों, वाले साधू ऋद्धीवान।
नौं भेदों युत चारण ऋद्धी, धारी साधू रहे महान।।
तप ऋद्धी के भेद सात हैं, तप करते साधू गुणवान।
मन बल वचन काय बल ऋद्धी, धारी साधू रहे प्रधान।। 2।।
भेद आठ औषधि ऋद्धि के, जिनके धारी सर्व ऋशीष।
रस ऋद्धी के भेद कहे छह, रसास्वाद शुभ पाए मुनीश।।
ऋद्धि अक्षीण महानस एवं, ऋद्धि महालय धर ऋषिराज।
जिनकी अर्चा कर हो जाते, सफल सभी के सारे काज।। 3।।

।। इति परमर्षि–स्वस्ति–मंगल–विधानं।।

(पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

श्री देव शास्त्र गुरु पूजन

स्थापना

देव–शास्त्र–गुरु पद नमन, विद्यमान तीर्थेश।
सिद्ध प्रभु निर्वाण भू, पूज रहे अवशेष।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरु समूह! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(चाल छन्द)

जल के यह कलश भराए, त्रय रोग नशाने आए।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शुभ गंध बनाकर लाए, भवताप नशाने आए।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी शुभ पाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, रुज काम से मुक्ती पाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

पावन नैवेद्य चढ़ाएँ, हम क्षुधा रोग विनशाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

घृत का ये दीप जलाएँ, अज्ञान से मुक्ती पाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, हम आठों कर्म नशाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल यहाँ चढ़ाएँ, शुभ मोक्ष महाफल पाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो मोक्षफल प्राप्ताय फलं निव. स्वाहा।

पावन ये अर्घ्य चढ़ाएँ, हम पद अनर्घ्य प्रगटाएँ।
हम देव–शास्त्र–गुरु ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निव. स्वाहा।

दोहा – शांती धरा कर मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धर।।

शान्तये शांतिधारा

दोहा – पुष्पांजलिं करते यहाँ, लिए पुष्प यह हाथ।
देव शास्त्र गुरु पद युगल, झुका रहे हम माथ।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।

जयमाला

दोहा – देव–शास्त्र–गुरु के चरण, वन्दन करें त्रिकाल।
'विशद' भाव से आज हम, गाते हैं जयमाल।।

(तामरस छंद)

जय–जय–जय अरहंत नमस्ते, मुक्ति वधू के कंत नमस्ते।
कर्म घातिया नाश नमस्ते, केवलज्ञान प्रकाश नमस्ते।
जगती पति जगदीश नमस्ते, सिद्ध शिला के ईश नमस्ते।
वीतराग जिनदेव नमस्ते, चरणों विशद सदैव नमस्ते।।
विद्यमान तीर्थेश नमस्ते, श्री जिनेन्द्र अवशेष नमस्ते।
जिनवाणी ॐकार नमस्ते, जैनागम शुभकार नमस्ते।
वीतराग जिन संत नमस्ते, सर्व साधु निर्ग्रन्थ नमस्ते।
अकृत्रिम जिनबिम्ब नमस्ते, कृत्रिम जिन प्रतिबिम्ब नमस्ते।।
दर्श ज्ञान चारित्र नमस्ते, धर्म क्षमादि पवित्र नमस्ते।
तीर्थ क्षेत्र निर्वाण नमस्ते, पावन पंचकल्याण नमस्ते।
अतिशय क्षेत्र विशाल नमस्ते, जिन तीर्थेश त्रिकाल नमस्ते।
शास्वत तीरथराज नमस्ते, 'विशद' पूजते आज नमस्ते।।

दोहा – अर्हतादि नव देवता, जिनवाणी जिन संत।
पूज रहे हम भाव से, पाने भव का अंत।।

ॐ ह्रीं श्री देव-शास्त्र-गुरुभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – देव–शास्त्र–गुरु पूजते, भाव सहित जो लोग।
ऋद्धि–सिद्धिं सौभाग्य पा, पावें शिव का योग।।

।। इत्याशीर्वादः (पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत)।।

अजितनाथ माण्डला

अजितनाथ स्तवन

दोहा – अजिनाथ भगवान का, जपें निरन्तर नाम।
अर्चा करके भाव से, पावें शिवपुर धाम।।

जिन स्वामी का स्वर्ग समागत, क्रीड़ाओं में देख प्रभाव।
मुख पर तत्क्षण बन्धु वर्ग के, आ जाता है विस्मय भाव।।
जिनकी शक्ति अजेय जानकर, अजितनाथ अन्वर्थक नाम।
बाल्यकाल में दिया भाव से, बन्धु वर्ग ने सौम्य ललाम।। 1।।
अपने मन में जिन जीवों की, सिद्धि कामना करे निवास।
उन प्रभु का आलम्बन है शुभ, करने वाला दिव्य प्रकाश।।
मंगलमय है नाम आपका, परम पवित्र चित्रपुट! पेय।
नेता हैं जो भव्यजनों के जिनका शासन रहा अजेय।। 2।।
मेघ पटल से होकर जैसे, प्रकट होय रवि बिम्ब महान।
कर देता अरविन्द वृन्द को, वैभव और विकाश प्रदान।।
भव्यों के मन का कलंक जो, करने हेतू अति उद्धार।
महा शक्ति के धारी प्रगटे, अजितेश्वर जग में आधार।। 3।।
जिन स्वामी ने किया प्ररूपित, धर्म तीर्थ अतिदिव्य ललाम।
करते जो अवगाहन उसमें, वे पाते दुख से विश्राम।।
तीक्ष्ण ताप से ज्यों निदाघ के, क्लेशित होके वन गज वृन्द।
अवगाहन शीतल गंगा के, जल में पाते हैं आनन्द।। 4।।
आत्म निष्ट जिन प्रभु को भाई, शत्रु मित्र हैं उभय समान।
ज्ञान ध्यान के द्वारा जिनने, किया कषायों का अवशान।।
आत्म सम्पदा पाने वाले, लोकजयी जिनराज महान।
स्वात्म सम्पदा विशद दिलाएँ, ऐसे अजित नाथ भगवान।। 5।।

दोहा – पूजा करके आपकी पूज्य, बनें श्रीमान।
अतः भाव से हम यहाँ, कटते हैं गुणगान।।

इत्याशीर्वादः

मथुरा चौरासी के श्री अजितनाथ भगवान की विधान पूजा

स्थापना

विजयी कर्मों के हुए, अजितनाथ भगवान।
विशद हृदय में आज हम, करते हैं गुणगान।।

ॐ ह्रीं मथुरा चौरासी स्थित श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

यह निर्मल नीर चढ़ाएँ, जन्मादिक रोग नशाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 1।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

हम चन्दन यहाँ चढ़ाएँ, संसार ताप विनशाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 2।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अक्षत हम यहाँ चढ़ाएँ, अक्षय पदवी हम पाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 3।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान जलं निर्व. स्वाहा।

सुरभित ये पुष्प चढ़ाएँ, हम काम रोग विनशाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 4।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय काम वाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

नैवेद्य सरस बनवाएँ, अर्पित कर क्षुधा नशाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 5।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हम ज्ञान दीप प्रजलाएँ, अब मोह कर्म विनशाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 6।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अग्नी में धूप जलाएँ, कर्मों से मुक्ती पाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 7।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विनाशनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल चरणों नाथ! चढ़ाए, शाश्वत पद मुक्ती पाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी!, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 8।।
ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

चरणों प्रभु अर्घ्य चढ़ाएँ, पावन अनर्घ्य पद पाएँ।
हे अजितनाथ जिन स्वामी, दुख मैटो अन्तर्यामी।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – शांतीदायक अप हो, अजितनाथ भगवान।
शांतीधारा दे रहे, तुम चरणों में आन।।

।। शान्तये ।।

दोहा – पुष्पांजलि करते चरण, पाने शिव सोपान।
अर्चा करते आपकी मिले शीघ्र निर्वाण।।

।। पुष्पाञ्जलि ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

जेठ अमावश को जिन स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्यां गर्भ मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

माघ शुक्ल दशमी दिन गाया, जन्म आपने पावन पाया।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 2।।

ॐ ह्रीं माघ सुदी दशमी जन्म मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दशमी शुक्ल माघ की भाई, प्रभु ने पावन दीक्षा पाई।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 3।।

ॐ ह्रीं माघ शुक्ला दशमी तपो मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पौष शुक्ल ग्यारस दिन आया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ला चतुर्थी ज्ञान मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चैत शुक्ल पाँचें जिनस्वामी, हुए आप मुक्ती पथगामी।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 5।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पंचम्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – सहज रूप को धार कर, सहज लगाए ध्यान।
सहज ज्ञान पाए प्रभू, करते तव गुणगान।।

(शम्भू छन्द)

अजितनाथ जिन के चरणों में, करते हम शत्–शत् वन्दन।
जित शत्रू के राज दुलारे, विजया माँ के जो नन्दन।।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गज है जिन का शुभ लक्षण।।
लाख बहत्तर पूर्व की आयू, हाथ अठारह सौ तुंग तन।। 1।।
जन्म समय दश अतिशय पाये, दश पाए पा केवलज्ञान।
चौदह अतिशय रहे देवकृत, प्रातिहार्य वसु रहे महान।।
ज्ञान दर्शनावरण मोहनीय, अन्तराय का करके नाश।
अनन्त चतुष्टय पाये प्रभु ने, कीन्हे अनुपम ज्ञान प्रकाश।। 2।।
दिव्य देशना देकर प्रभु जी, किए जगत जन का कल्याण।
सर्व कर्म को नाश आपने, पाया अनुपम पद निर्वाण।।
कूट सिद्धवर तीर्थराज से, किए मोक्ष को आप प्रयाण।
'विशद' भावना भाते हैं हम, होय जगत जन का कल्याण।। 3।।
प्रकट हुए प्रभु नगर ग्वालियर, शुभ महिमा तब दिखलाए।
श्रावक श्रेष्ठी हुए एकत्रित, पावन जो दर्शन पाए।।
मथुरा चौरासी में प्रभु जी, मूल नायक कहलाते हैं।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, अतिशय पुण्य कमाते हैं।। 4।।

दोहा – अर्चा करते आपकी, होकर भाव विभोर।
'विशद' भावना है यही, हो शांती चहुँ ओर।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – नाथ! आपके द्वार पर, होती पूरी आस।
शिवपदवी हमको मिले, विशद यही अरदास।।

।। इत्यादि पुष्पांजलि क्षिपेत्।।

प्रथम वलयः

दोहा – उपदेशक षट् द्रव्य के, अजितनाथ भगवान।
पुष्पांजलि करके यहाँ, करते हम गुणगान।।

।। प्रथमो वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

छह द्रव्यों के अर्घ्य

(जोगीरासा छन्द)

है उपयोग 'जीव' का लक्षण, ऐसी श्रद्धा धारी।
सम्यक् दृष्टी जीव कहाए, अतिशय मंगलकारी।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।। 1।।

ॐ ह्रीं जीव द्रव्य ज्ञायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'पुद्गल द्रव्य' कहा है मूर्तिक, दश पर्यायों वाला।
जो सम्यक् श्रद्धान जगाए, है वह जीव निराला।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।। 2।।

ॐ ह्रीं पुद्गल द्रव्य ज्ञायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव और पुद्गल द्रव्यों को, होवे चलन सहाई।
'धर्म द्रव्य' होता अमूर्त यह, श्रद्धा धारो भाई।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।। 3।।

ॐ ह्रीं धर्म द्रव्य ज्ञायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जीव और पुद्गल द्रव्यों को रुकने हेतु सहाई।
'द्रव्य अधर्म' अचेतन गाया, यह श्रद्धा हो भाई।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।। 4।।

ॐ ह्रीं अधर्म द्रव्य ज्ञायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अवगाहन देता द्रव्यों को, वह 'आकाश' बताया।
ऐसी श्रद्धा धारी जिसने, उसने शिव पद पाया।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।। 5।।

ॐ ह्रीं आकाश द्रव्य ज्ञायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

'काल द्रव्य' परिणमन, हेतु है, द्रव्यों का सहयोगी।
ऐसी श्रद्धा धारण करके, ज्ञानी बनते योगी।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।। 6।।

ॐ ह्रीं काल द्रव्य ज्ञायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

छह द्रव्यों के साथ तत्त्व के, जो स्वरूप का ज्ञाता।
अल्प समय में रत्नत्रय पा, वह शिव पद को पाता।।
ज्ञानाचरण को पाने वाला, केवल ज्ञान जगाए।
अर्चा करने वाला जिन की, अर्हत् पदवी पाए।। 7।।

ॐ ह्रीं षड् द्रव्य ज्ञायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा – भाए बारह भावना, धारे मन वैराग।
जिनकी अर्चा कर रहे, धर चरणों अनुराग।।

।। द्वितिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

(सखी छन्द)

धन वैभव जग के सारे, हैं झूठे स्वप्न हमारे।
तन जीवन अस्थिर गाए, क्षण–क्षण में जो मुरझाए।। 1।।

ॐ ह्रीं अनित्य भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर–असुर नराधिप जानों, ना शरण कोई है मानो।
मणि मंत्र तंत्र जो गाए, ना मरते कोई बचाए।। 2।।

ॐ ह्रीं अशरण भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

संसार महा दुखदायी, है सुखाभास मय भाई।
इसमें जग जीव भ्रमाते, जो जन्म मरण दुख पाते।। 3।।

ॐ ह्रीं संसार भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह जन्म जीव इक पावे, संसार में एक भ्रमावे।
इक जीव मरण कर जावे, एकत्व भावना भावे।। 4।।

ॐ ह्रीं एकत्व भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन चेतन भिन्न बताये, जो क्षीर नीर सम गाये।
फिर गृह धन, परिजन, दारा, क्या देंगे साथ हमारा।। 5।।

ॐ ह्रीं अन्यत्व भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन का श्रृंगार कराया, यह जीवन व्यर्थ गँवाया।
अत्यन्त अशुचि जड़ काया, चैतन्य जीवन यह गाया।। 6।।

ॐ ह्रीं अशुचि भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब योग चपल हो जाये, तो प्राणी आस्रव पावे।
आश्रव गाया दुखदायी, भव भ्रमण कराए भाई।। 7।।

ॐ ह्रीं आश्रव भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो पुण्य पाप परिहारी, आतम अनुभव चित् धारी।
आस्रव रोके वे प्राणी, संवर करते मुनि ज्ञानी।। 8।।

ॐ ह्रीं संवर भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो कर्म निर्जरा भाई, सम्यक् तप से शिवदायी।
फिर आत्म शुद्ध हो जावे, जो शिवपुर में पहुँचावे।। 9।।

ॐ ह्रीं निर्जरा भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कर कटि पर पग फैलाए, मानव सम लोक दिखाए।
चौदह राजू ऊँचाई, में भ्रमण जीव का भाई।। 10।।

ॐ ह्रीं लोक भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

धन कंचन वैभव पाना, सब सुलभ लोक में माना।
पर ज्ञान यथारथ जानो, दुर्लभ जग में है मानो।। 11।।

ॐ ह्रीं बोधिदुर्लभ भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय धर्म बताया, वस्तू स्वभाव शुभ गाया।
दश धर्म क्षमादिक भाई, हैं 'विशद' मोक्ष पददायी।। 12।।

ॐ ह्रीं धर्म भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – अनुप्रेक्षा चिन्तन किए, मन में जगे 'विराग'।
'विशद' भावना है यही, बुझे राग की आग।।

ॐ ह्रीं बारह भावनाप्ररूपक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा – दोष अठारह से रहित, होते हैं जिनराज।
जिनकी अर्चा भाव से, करते हैं हम आज।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अष्टादश दोष रहित जिन

(चाल छन्द)

जो क्षुधा दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो तृषा दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो जन्म दोष को पावें, मरकर के फिर उपजावें।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है रोग दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 10।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 11।।

ॐ ह्रीं मोह दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 12।।

ॐ ह्रीं भय दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 13।।

ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चिन्ता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 14।।

ॐ ह्रीं चिन्ता दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 15।।

ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है राग आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 16।।

ॐ ह्रीं राग दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जिसके मन द्वेष समाए, वह भारी क्षति पहुँचाए।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 17।।

ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं मरण दोष के नाशी, वह होते शिवपुर वासी।
जिनवर यह दोष नशाए, फिर तीर्थंकर पद पाए।। 18।।

ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – दोष अठारह से रहित, होते है भगवान।
जिनकी अर्चा कर मिले, पावन पद निर्माण।। 19।।

ॐ ह्रीं अष्टादश दोष रहिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा – बाह्यभ्यन्तर संग से, रहित कहे भगवान।
जिनकी अर्चा कर रहे, पाने पद सोपान।।

।। चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

24 परिग्रह रहित जिन के अर्घ्य

(चौपाई)

जो 'मिथ्या' भाव जगावें, वे सत् श्रद्धा न पावें।
जो हैं मिथ्यात्व विनाशी, वे होते शिवपुर वासी।। 1।।

ॐ ह्रीं मिथ्या परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हैं 'क्रोध' कषाय के धारी, वह दुख पाते हैं भारी।
जो क्रोध कषाय नशावें, वे शिव पदवी को पावें।। 2।।

ॐ ह्रीं कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो 'मान' करें जग प्राणी, वह स्वयं उठाते हानी।
जो मान कषाय नशावें, वे शिव पदवी को पावें।। 3।।

ॐ ह्रीं मान परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो करते 'मायाचारी', दुख सहते वह नर नारी।
जो माया कषाय नशावें, वे शिव पदवी को पावें।। 4।।

ॐ ह्रीं माया परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जग के सब 'लोभी' प्राणी, मानो पापों की खानी।
जो लोभ कषाय नशावें, वे शिव पदवी को पावें।। 5।।

ॐ ह्रीं लोभ परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(तांटक छन्द)

करते हास्य जहाँ में प्राणी, जिससे करते हैं निज हानी।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 6।।

ॐ ह्रीं हास्य नो कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रति करके जो राग बढ़ावें, उनसे वे दुख कई पावें।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 7।।

ॐ ह्रीं रति नो कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

करके अरति द्वेष के धरी, निज को क्षति करते हैं भारी।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 8।।

ॐ ह्रीं अरति नो कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

इष्ट वस्तु जिसकी खो जावे, इससे प्राणी शोक बढ़ावे।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 9।।

ॐ ह्रीं शोक नो कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भयकारी वस्तू को पावें, मन में प्राणी भय उपजावें।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 10।।

ॐ ह्रीं भय नो कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देखे घृणित वस्तु नर कोई, जिससे मन मे ग्लानी होई।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 11।।

ॐ ह्रीं जुगुप्सा नो कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री वेद उदय जो पावे, स्त्री जन्य भाव प्रगटावे।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 12।।

ॐ ह्रीं पुरुष वेद कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुरुष वेद का उदय जगावे, पुरुष जन्य जो भाव बनावे।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 13।।

ॐ ह्रीं स्त्री वेद कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वेद नपुंसक प्राणी पावे, स्त्री पुरुष में राग जगावे।
प्रभु जी हास्य कर्म के नाशी, पूज्य हुए शिवपुर के वासी।। 14।।

ॐ ह्रीं नपुंसक वेद कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(छन्द भुजंगप्रयात)

खेती के मन में जो भाव जगाएँ, 'क्षेत्र परिग्रह' के धारी कहाएँ।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 15।।

ॐ ह्रीं क्षेत्र परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कोठी महल बंगला जो बनावें, 'वास्तु परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 16।।

ॐ ह्रीं परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चाँदी की मन में जो आशा जगावें, 'परिग्रह हिरण्य' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 17।।

ॐ ह्रीं हिरण्य कषाय परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सोने के आभूषण आदी मंगावें, 'परिग्रह जो स्वर्ण' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 18।।

ॐ ह्रीं स्वर्ण परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पशुओं के पालन में मन को लगावें, वह 'धन परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 19।।

ॐ ह्रीं धन परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

लेकर के धान्य जो कोठे भरावें, वह 'धान्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 20।।

ॐ ह्रीं धान्य परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सेवा के हेतु जो नौकर बुलावें, वह 'दास परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 21।।

ॐ ह्रीं दास परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

स्त्री से अपनी जो सेवा करावें, वे 'दासी परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 22।।

ॐ ह्रीं दासी परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

कपड़े जो नये-नये कइ लेकर के आवें, वे 'कुप्य परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 23।।

ॐ ह्रीं कुप्य परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भाड़े या बर्तन से कोठे भरावें, वह 'भाण्ड परिग्रह' के धारी कहावें।
बहिरंग तजकर परिग्रह ये भाई, जिनवर ने मुक्ति श्री श्रेष्ठ पाई।। 24।।

ॐ ह्रीं भाण्ड परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – परिग्रह चौबिस का प्रभु, करके पूर्ण विनाश।
शिवपथ के राही बने, कीन्हे शिवपुर वास।। 25।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति परिग्रह रहित श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

समुच्चय जयमाला

दोहा – पार ना गणधर पा सकें, जिन गुण विमल विशाल।
अजितनाथ भगवान की, गाते हैं जयमाल।।

जिनगृह मिलकर चलो साथियो, जिनवर की महिमा गाएँ।
तीर्थंकर सर्वज्ञ जिनेश्वर, की पूजन कर हर्षाएँ।। टेक।।
पूर्व पुण्य के प्रबल योग से, नर भव पाते हैं प्राणी।
जैन धर्म शुभ धारण करते, भवि जन का जो कल्याणी।।
जिन दर्शन पूजा भक्ती के, भाव पुण्य से ही आएँ।। जिनगृह...।। 1।।
देशव्रती बनते हैं कोई, कोई संयम अपनाते।
संवर और निर्जरा अतिशय, जीवन में वे कर पाते।।
कर्म घातिया नाश करें जो, केवलज्ञान वही पाएँ।। जिनगृह...।। 2।।
प्रबल पुण्य का योग जगे तो, तीर्थंकर पदवी पावें।
गर्भ जन्म तप ज्ञान मोक्ष ये, पंचकल्याणक प्रगटावें।।
दिव्य देशना देते जग को, श्री जिनवर को हम ध्याएँ।। जिनगृह...।। 3।।
नाथ! आपकी महिमा सुनकर, द्वार आपके हम आए।
जिसपद को तुमने पाया, वह प्राप्त हमें भी हो जाए।।
भव सिन्धू से पार करों, ना भव वन में अब भटकाएँ।। जिनगृह...।। 4।।

दोहा – गुण गाकर प्रभु आपके, पाना गुण भण्डार।
जाना है हमको विशद, भव सिन्धू के पार।।

ॐ ह्रीं श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा –शिवपथ के राही बने, अजितनाथ जिनराज।
जयमाला गाए विशद, मिलकर सकल समाज।।

।। इत्याशीर्वाद पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

श्री अजितनाथ भगवान की दैनिक पूजा

स्थापना

चौथे काल के प्रथम तीर्थंकर, अजितनाथ जी हुए महान।
नगर अयोध्या जन्म लिए प्रभु, गिरि सम्मेद शिखर निर्वाण।।
तीर्थ क्षेत्र मथुरा चौरासी, में जिन मूलनायक भगवान।
जिनकी अर्चा करने को हम, भाव सहित करते आह्वान।।

दोहा – भक्त पुकारें आपको, तीर्थंकर भगवान।
आओ तिष्ठो मम हृदय, करते हम गुणगान।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतरस वौषट्अ ाह्वाननं।अ त्रि तष्ठि तष्ठठ :ठ :स्थापनं।अ त्रम म्स न्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(सखी छन्द)

तर्ज – देख तेरे संसार की हालत.............

जिसे आपका दर्शमिला हैऽऽ, जीवन उसका स्वयं खिला है।
अर्जी जो भी यहाँ लगाएऽऽ, सुख शांती जीवन में पाए।।
जल अर्पण करते तुम चरणों, हे मेरे भगवान.......
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 1।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

भक्ति सहित चरणों जो आएऽऽ, इच्छित फल वह प्राणी पाए।
नाथ! आपका बने पुजारी, ऐसी महिमा नाथ! तुम्हारी।।
चन्दन चर्चित करते चरणों, हे मेरे भगवान..........
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 2।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चदनं निर्व. स्वाहा।

जिनने चरणों भक्ति जगाईऽऽ, उनने पाई जग प्रभुताई।
महिमा भक्ति की रही निराली, सारे संकट हरने वाली।।
अक्षत धवल चढ़ाते हैं हम, हे मेरे भगवान.........
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 3।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

काँटों में ज्यों पुष्प महकतेऽऽ, समता में त्यों सुगुण चमकते।
काम रोग से जीव सताए, तुम चरणों में शांती पाए।।
सुरभित पुष्प चढ़ाते चरणों, हे मेरे भगवान...........
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 4।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय कामवाण विधवंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

स्वर व्यंजन अक्षर जो गाएऽऽ, उनके ही नैवेद्य बनाए।
भावों के शुभ छन्द सजाए, श्रद्धा जिनमें शुभ झलकाए।।
भक्ती से नैवेद्य चढ़ाते, हे मेरे भगवान............
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 5।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

जिस–जिस को हमने अपनायाऽऽ, उनने हर पल राग बढ़ाया।
मोह अंध में हमें फँसाया, चारों गति में भ्रमण कराया।।
दीप जलाकर पूजा करते, हे मेरे भगवान............
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 6।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोहान्धाकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अष्ट कर्म से जीव सताएऽऽ, जिनके कारण सुख दुख पाए।
दर्श ज्ञान चारित ना पाए, अतः कर्म के बन्ध बताए।।
धूप जलाते कर्म नशाने, हे मेरे भगवान............
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 7।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों का फल प्राणी पातेऽऽ, कभी हर्ष कभी दुःख मनाते।
हर्ष विषाद करें अज्ञानी, समता धारण करते ज्ञानी।।
फल यह सरस चढ़ाने लाए, हे मेरे भगवान.............
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 8।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

शरण में आके जो भी ध्याते, भक्ती का फल प्राणी पाते।
भक्ती से जो भक्त पुकारें, पाते हैं वे चरण सहारे।।
अर्घ्य चढ़ाते 'विशद' भाव से, हे मेरे भगवान.............
कि हे प्रभु! करो जगत कल्याण, कि मेरे अजितनाथ भगवान।। 9।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा – रिश्ते हैं सब स्वार्थ के, कोई ना देवे साथ।
शांती धारा दे रहे, शिव फल दो हे नाथ!।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा – अर्चा करते आपकी, पाने भव से पार।
पुष्पांजलि करतें चरण, करो नाथ! उद्धार।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

पंचकल्याणक के अर्घ्य

जेठ अमावश को जिन स्वामी, गर्भ में आए अन्तर्यामी।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 1।।

ॐ ह्रीं ज्येष्ठ कृष्णा अमावस्यां गर्भ मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

माघ सुदी दशमी दिन आया, जन्म प्रभू ने जिस दिन पाया।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 2।।

ॐ ह्रीं माघ सुदी दशमी जन्म मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य नि.स्वा.।

माघ सुदी दशमी को स्वामी, दीक्षा पाए अन्तर्यामी।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 3।।

ॐह्र ींम ाघश ुक्लाद शमीत पोम ंगलम ंडितायश्र ीअ जितनार्थ जनेन्द्रायअ र्घ्यि न.स्वा.।

पौष सुदी शुभ चौथ बताई, विशद ज्ञान पाए प्रभु भाई।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 4।।

ॐ ह्रीं पौष शुक्ला चतुर्थी ज्ञान मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

चैत शुक्ल पाँचें को स्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी।
अजितनाथ जिनवर को ध्याएँ, पद में सादर शीश झुकाएँ।। 5।।

ॐ ह्रीं चैत्र शुक्ला पंचम्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्य निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – अजितनाथ तव चरण में, वन्दन करते आज।
जयमाला गाते विशद, तारण तरण जहाज।।

(चाल-टप्पा)

नगर अयोध्या विजय अनुत्तर, से चयकर भाई।
इक्ष्वाकु-वंशी नृप दृढ़रथ, माँ विजया गाई।।
जिनेश्वर.......... ।। 1।।

साढ़े चार सौ धनुष प्रभू की, जानों ऊँचाई।
आयु बहत्तर लाख पूर्व की, प्रभु जी ने पाई।।
जिनेश्वर.......... ।। 2।।

उल्कापात देखकर प्रभु ने, जिन दीक्षा पाई।
सिंहसेनादिक नब्बे गणधर, थे प्रभु के भाई।।
जिनेश्वर.......... ।। 3।।

गिरि सम्मेद शिखर से पाँचें, फाल्गुन वदी गाई।
कूट सिद्धवर से खड्गासन, में मुक्ती पाई ।।
जिनेश्वर.......... ।। 4।।

नगर ग्वालियर भू से प्रगटे, श्वेत वर्ण पाई।
लक्ष्मी चन्द सेठ की फैली, चहुँ दिश प्रभुताई।।
जिनेश्वर.......... ।। 5।।

मथुरा प्रतिमा जी ले जाओ, सपना जो पाई।
वह बेटा रघुनाथ को सारी, बात कही भाई।।
जिनेश्वर.......... ।। 6।।

बैलगाड़ी में जिन प्रतिमा जी, उसने बैठाई।
श्रद्धा से श्री जिनवर प्रतिमा, मथुरा पहुँचाई।।
जिनेश्वर.......... ।। 7।।

दोहा – हुई प्रतिष्ठा वेदि में, मथुरा के जिनधाम।
भव्य जीव पूजा करें, करके चरण प्रणाम।।

ॐ ह्रीं सिद्ध क्षेत्र मथुरा चौरासी स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्य निर्व. स्वाहा।

दोहा – सिद्ध भूमि पर शोभते, अजितनाथ भगवान।
'विशद' भाव से जिन चरण, करते हम गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

श्री अजितनाथ चालीसा

दोहा – नमन करें अरिहंत को, सिद्धों को भी साथ।
आचार्य उपाध्याय साधु को, झुका रहे हम माथ।।
जिनवाणी जिनधर्म जिन, चैत्यालय शुभकार।
अजितनाथ के पद युगल, वन्दन बारम्बार।।

(चौपाई)

जय जय अजितनाथ जिन स्वामी, हो स्वामी तुम अन्तर्यामी।। 1।।
तुमने सर्व चराचर जाना, जैसा है उस रूप बखाना।। 2।।
आप हुए प्रभु केवलज्ञानी, कल्याणी प्रभु तेरी वाणी।। 3।।
तुमने प्रभु शिवमार्ग दिखाया, आत्मबोध इस जग ने पाय।। 4।।
देवों के तुम देव कहाते, सारे जग में पूजे जाते।। 5।।
विजय अनुत्तर है शुभकारी, चयकर आये हे त्रिपुरारी!।। 6।।
जम्बूद्वीप लोक में गाया, भरत क्षेत्र उसमें बतलाया।। 7।।
जिसमें कौशल देश बखाना, नगर अयोध्या अतिशय माना।। 8।।
जितशत्रु राजा कहलाए, रानी विजया देवी पाए।। 9।।
ज्येष्ठ अमावस को जिन स्वामी, गर्भ में आये अन्तर्यामी।। 10।।
गर्भ नक्षत्र रोहिणी गाया, ब्रह्ममुहूर्त श्रेष्ठ बतलाया।। 11।।
माघ शुक्ल दशमी शुभकारी, जन्म लिए जिनवर अविकारी।। 12।।
तभी इन्द्र का आसन डोला, लोगों ने जयकारा बोला।। 13।।
आसन से तब उठकर आया, सप्त कदम चल शीश झुकाया।। 14।।
ऐरावत पर चढ़कर आया, साथ में शचि को अपने लाया।। 15।।
मेरू गिरि पर लेकर जावे, पाण्डुक शिला पर न्हवन करावे।। 16।।
इन्द्र ने पद में शीश झुकाया, पग में गज लक्षण शुभ पाया।। 17।।
हाथ अठारह सौ ऊँचाई, अजितनाथ के तन की गाई।। 18।।
लाख बहत्तर पूरब भाई, जिनवर ने शुभ आयु पाई।। 19।।
उल्कापात देखकर स्वामी, दीक्षा धारे अन्तर्यामी।। 20।।
माघ शुक्ल नौमी दिन गाया, संध्याकाल का समय बताया।। 21।।
देव पालकी सुप्रभ लाए, उसमें प्रभुजी को बैठाये।। 22।।
ले उद्यान सहेतुक आए, सप्तपर्ण तरु तल पहुँचाए।। 23।।
केशलुंच कर वस्त्र उतारे, सहस मुनि सह दीक्षा धारे।। 24।।
बेलोपवास किए जिन स्वामी, ध्यान किए निज अन्तर्यामी।। 25।।
ब्रह्मदत्त पड़गाहन कीन्हें, क्षीर खीर आहार जो दीन्हें।। 26।।
उल्कापात देखकर स्वामी, तप धारे मुक्ती पथ गामी।। 27।।
पौष शुक्ल एकादिश पाए, केवलज्ञान प्रभू प्रगटाए।। 28।।
धनपति स्वर्ग से चलकर आया, समवशरण अनुपम बनवाया।। 29।।
साढ़े ग्यारह योजन जानो, छियालिस कोष श्रेष्ठ पहिचानो।। 30।।
नब्बे गणधर प्रभु के गाए, प्रथम केसरी सिंह कहाए।। 31।।
एक लाख मुनि संख्या पाई, श्रेष्ठ यक्षिणी अजिता गाई।। 32।।
महायक्ष शुभ यक्ष बताया, श्रोता चक्री सगर कहाया।। 33।।
तीन लाख श्रावक शुभ जानो, पाँच लाख श्राविकाएँ मानो।। 34।।
प्रभु सम्मेद शिखर पर आए, कूट सिद्धवर अतिशय पाये।। 35।।
योग निरोध प्रभू ने पाया, एक माह का समय बताया।। 36।।
चैत शुक्ल पाँचे शुभ गाई, प्रातः तुमने मुक्ती पाई।। 37।।
कायोत्सर्गासन जिन पाए, सहस मुनी सह मोक्ष सिधाए।। 38।।
प्रतिमाएँ कई मंगलकारी, रहीं लोक में अतिशयकारी।। 39।।
जिनका आलम्बन हम पाते,पद में सादर शीश झुकाते।। 40।।

सोरठा – पढ़े भाव के साथ, चालीसा चालीस दिन।
चरण झुकाए माथ, सुख–शांती सौभाग्य हो।।
पावे धन सन्तान,दीन दरिद्री होय जो।
''विशद'' मिले सम्मान, नाम वंश यश भी बढ़े।।

''श्री अजितनाथ जी की आरती''

तर्ज – अंजन की सीटी मे म्हारो.....

करो–करो रे–2 प्रभू की भक्ती, होले–2 होले–2
जिनवर की भक्ती में, म्हारो मन डोले।। टेक।।
नगर अयोध्या जन्म लिए, प्रभु तीर्थंकर अविकारी।
दृढ़रथ राजा माँ विजया के, गृह जन्मे त्रिपुरारी।
करो..........।। 1।।
साढ़े चार सौ धनुष आपके, तन की थी ऊँचाई।
लाख बहत्तर आयु आपकी, स्वर्ण रंग था भाई।
करो..........।। 2।।
कर्म घातिया नाश किए, प्रभू केवल ज्ञान जगाएँ।
नगर बनारस समवशरण शुभ, नौ योजन का पाए।
करो..........।। 3।।
फाल्गुन कृष्ण सप्तमी को प्रभु, तीर्थराज पर आए।
योग निरोध किए जिन स्वामी, ''विशद'' मोक्ष पद पाए।।
करो..........।। 4।।
प्रकट हुई प्रतिमा ग्वालियर में, मथुरा में जो लाए।
भव्य जीव जिन अर्चा करके, अतिशय हर्ष मनाए।।
करो..........।। 5।।

अंतिम अनुबद्ध केवली
श्री जम्बूस्वामी की पूजा

स्थापना

विद्युन्माली ब्रम्ह स्वर्ग से, आयु पूर्ण कर किये प्रयाण।
राजगृही नृप अर्हद्दास गृह, जिनमति पाई गर्भ महान।।
चरम शरीरी आप हुए शुभ, जम्बू स्वामी पाए नाम।
चौरासी मथुरा से पाया, प्रभू आपने पद निर्वाण।।

दोहा – भक्त पुकारें आपको, हृदय पधारो आन।
आह्वानन् करते प्रभो!, करने को गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्र! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(शम्भू छन्द)

हमने सदियों से जल पीकर, इस तन की प्यास बुझाई है।
किन्तू चेतन की प्यास कभी न, शांत पूर्ण हो पाई है।।
अब जन्म-जरादिक रोग नशे, यह निर्मल नीर चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 1।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

शीतल चन्दन के लेपन से, यह तन शीतल हो जाता है।
किन्तू शीतलता यह चेतन न, जरा प्राप्त कर पाता है।।
अब भव सन्ताप नशाने को, यह चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं निर्व. स्वाहा।

हम चतुर्गती भटकाए हैं, अक्षय निधि न मिल पाई है।
है अक्षय मेरा धाम श्रेष्ठ, न उसकी सुधि भी आई है।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 3।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान निर्व. स्वाहा।

बहु काम व्यथा से पीड़ित हो, भव के भोगों में लीन रहे।
भव के भोगों को पाने में, हमने अनगिनते कष्ट सहे।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 4।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय कामवाण विनाशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

व्यंजन खाकर के हमने कई, इस तन को पुष्ट बनाया है।
न भोग किया निज चेतन का, न योग शुद्ध हो पाया है।।
अब क्षुधा रोग हो पूर्ण नाश, नैवेद्य चढ़ाने लाए हैं।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकाते हैं।। 5।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय क्षुधाारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

हमने मोहित हो सदियों से, सारे जग को अपनाया है।
अज्ञान तिमिर में भ्रमित हुए, न ज्ञान दीप जल पाया है।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते है।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 6।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय मोहांधाकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

कर्मों के बंध पड़े भारी, जो बन्धन डाले रहते हैं।
जीवन रहता तब तक जग में, घन घातकर्म का सहते हैं।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते है।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 7।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फल की आशा में भ्रमण किया, न क्षेत्र कोई अवशेष रहा।
फल पाया हमने नाशवान, फिर पछताना ही शेष रहा।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते है।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 8।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय मोक्ष फल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

हो मूल्यवान कोई वस्तू, हमने इस जग की पाई है।
न प्राप्त हुई शायद कोई, फिर भी शक्ति अजमाई है।।
अब भव सन्ताप नशाने को यह, चन्दन श्रेष्ठ चढ़ाते है।
श्री जम्बू स्वामी के चरणों, हम सादर शीश झुकातें हैं।। 9।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बू स्वामी जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – शांतिधारा दे रहे, चरणों में धर ध्यान।
जम्बु स्वामि का हम करें, भाव सहित गुणगान।।

।। शान्तये शान्तिधारा ।।

दोहा – पुष्पांजलि करते चरण, जम्बु स्वामि पद आज।
अर्चा करते भाव से, पाने शिव पदराज्य।।

।। पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

जयमाला

दोहा – अर्हद्दास के लाड़ले, जिनमति माँ के लाल।
जम्बू स्वामि जिन की विशद, गाते हैं जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

मध्य लोक के दक्षिण दिश में, जम्बूद्वीप है धनुषाकार।
भरत क्षेत्र में आर्यखण्ड शुभ, भारत देश है शुभ मनहार।।
मगध देश राजगृहि नगरी, के श्रेणिक गाये भूपाल।
अर्हद्दास जिन भक्त वहाँ के, जिनगृह में जन्मा इक लाल।। 1।।
रूपवान सुन्दर शुभ लक्षण, धारी था जो अतिगुणवान।
युवा अवस्था में ही जो था, अतिशय कारी पौरुषवान।।
रत्न चूल विद्याधर को जो, किए पराजित कर संग्राम।
नृप मृगांक की कन्या रक्षित, करके पहुँचाए निज धाम।। 2।।
गुरु सुधर्म राजगृही में, कर विहार आए इक बार।
चरण वन्दना करके उनकी, शरण आपने की स्वीकार।।
सुनकर के उपदेश गुरू का, जाना यह संसार असार।
जन्मे मरे अकेला चेतन, भ्रमण करे जग बारम्बार।। 3।।
संयम धारण करना हमको, मात–पिता से कहे कुमार।
सुनकर के तब मात–पिता जी, समझाए थे अपरम्पार।।
किन्तु वचन यह लिए पुत्र से, ब्याह रचाओ हे सुकुमार!
एक रात्रि रहकर के संयम, धारण करना तुम स्वीकार।। 4।।
वचन बद्ध हो ब्याह रचाए, परणाई कन्याएँ चार।
चार पहर वह भी समझाईं, समझाकर वे मानी हार।।
चोर तभी चोरी को आया, विद्युतच्चर था जिसका नाम।
वार्ता सुनकर के कुमार की, उसके भी बदले परिणाम।। 5।।
दीक्षा धारण किए सभी वे, कठिन तपस्या की स्वीकार।
मथुरा चौरासी के वन में, जम्बू स्वामी आए अनगार।।
कठिन तपस्या करके अपने, कीन्हें आठों कर्म विनाश।
हो अनुबद्ध केवली अन्तिम, सिद्ध शिला पर किए निवास।। 6।।
अतिशयकारी रहा जिनालय, अजितनाथ जिसमें भगवान।
प्रकट हुए जिनबिम्ब यहाँ पर, अतिशय यह भी हुआ महान।।
कृष्ण पक्ष कार्तिक में मेला, होय रथोत्सव भी शुभकार।
चरण चिन्ह जम्बू स्वामी के, है विशाल प्रतिमा मनहार।। 7।।

दोहा – श्रद्धा जागे दर्श कर, गुण गाएँ गुणवान।
भव्य जीव जिन ध्यान कर, पावें पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्री मथुरा चौरासी सिद्धक्षेत्र स्थित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – जिन अर्चा करके सभी, पावें पुण्य निधान।
अनुक्रम से पावें 'विशद', शिव पद के सोपान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

प्रथम वलयः

दोहा – कर्म घातिया नाशकर, प्रगटाए गुण चार।
जम्बुस्वामि के पद युगल, वन्दन बारम्बार।।

।। प्रथम वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अनन्त चतुष्टय के अर्घ्य

(शम्भू छन्द)

जो ज्ञान प्रगट न होने दे, वह ज्ञानावरणी कर्म कहा।
जो कर्म नाश कर प्रगट करे, वह केवल ज्ञान प्रकाश रहा।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीश झुकाते हैं, हे सिद्ध! शिला के अधिकारी।। 1।।

ॐ ह्रीं अनन्तज्ञान प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है कर्म दर्शनावरण जहाँ में, दर्शन गुण का घात करे।
जो नाश करे इसका साधक, वह केवल दर्शन प्राप्त करे।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध! शिला के अधिकारी।। 2।।

ॐ ह्रीं अनन्तदर्शन प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह मोह कर्म दुखदाई है, इसने जग को भरमाया है।
जिसने उसको ठुकराया है, उसने समकित गुण पाया है।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध! शिला के अधिकारी।। 3।।

ॐ ह्रीं अनन्तसुख प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह अन्तराय है कर्म घातिया, सद्गुण का जो नाशी है।
उसका भी घात किए स्वामी, जो बल अनन्त की राशी हैं।।
प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध! शिला के अधिकारी।। 4।।

ॐ ह्रीं अनन्तवीर्य प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो कर्म घातिया नाश किए, वे अन्तचतुष्टय पाते हैं।
वे होकर के शिव के राही, फिर सिद्ध शिला पर जाते हैं।।

प्रभु अष्ट गुणों को पाए हैं, उनकी महिमा विस्मयकारी।
हम चरणों शीष झुकाते हैं, हे सिद्ध! शिला के अधिकारी।। 5।।

ॐ ह्रीं अनन्तचतुष्टय प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

द्वितीय वलयः

दोहा – प्रातिहार्य धारी कहे, श्री जम्बू जिनराज।
पुष्पांजलि करते विशद, जिनके चरणों आज।।

।। द्वितीय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अष्ट प्रातिहार्य के अर्घ्य

(चौपाई)

क्षत्रत्रय जिनके सिर सोहें, जो भविजन के मन को मोहें।
जम्बू स्वामी जी जो पाए, मथुरा से जो मोक्ष सिधाए।। 1।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सिंहासन छविदार सुहाना, सौख्य प्रदायी है जो नाना।
जम्बू स्वामी जी जो पाए, मथुरा से जो मोक्ष सिधाए।। 2।।

ॐ ह्रीं सिंहासन प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

भामण्डल की कान्ति निराली, जन–जन को सुख देने वाली।
जम्बू स्वामी जी जो पाए, मथुरा से जो मोक्ष सिधाए।। 3।।

ॐ ह्रीं भामण्डल प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चौंसठ चँवर ढुरें जिन द्वारे, पूजें कार्य सिद्ध हों सारे।
जम्बू स्वामी जी जो पाए, मथुरा से जो मोक्ष सिधाए।। 4।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टि चँवर प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तरु आशोक है शोक निवारी, पावन सार्थक नाम का धारी।
प्रातिहार्य पावन कहलाए, जम्बू स्वामी जी जो पाए।। 5।।

ॐ ह्रीं अशोक तरु प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देव दुन्दुभी बजे सुहानी, सौख्य मनावे जग के प्राणी।
प्रातिहार्य पावन कहलाए, जम्बू स्वामी जी जो पाए।। 6।।

ॐ ह्रीं दुन्दुभि प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पुष्प वृष्टि होवे मनहारी, सौख्य प्रदायक अतिशयकारी।
प्रातिहार्य पावन कहलाए, जम्बू स्वामी जी जो पाए।। 7।।

ॐ ह्रीं पुष्पवृष्टि प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

विशद खिरे सर्वांग से वाणी, भवि जीवों की जो कल्याणी।
प्रातिहार्य पावन कहलाए, जम्बू स्वामी जी जो पाए।। 8।।

ॐ ह्रीं दिव्य ध्वनि प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(घत्ता छन्द)

भव–भव दुख हारक, शिव सुख कारक, धर्म प्रचारक गुणवन्ता।
रत्नत्रय धारक, दोष निवारक, कर्म विदारक अरहन्ता।।
प्रातिहार्य के धारी, मंगलकारी, दोष निवारी हे स्वामी।
तुम हो अविकारी, संयम धारी, जम्बूस्वामी शिवगामी।। 9।।

ॐ ह्रीं अष्ट प्रातिहार्ययुक्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तृतिय वलयः

दोहा – द्वादश तप शुभ धारकर, कीन्हे कर्म विनाश।
राही मुक्ती मार्ग के, पावें शिवपुर वास।।

।। तृतिय वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

द्वादश तप के अर्घ्य

(वेसरी छन्द)

जिन अनशन तप को पावें, वे अपने कर्म नशावें।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 1।।

ॐ ह्रीं अनशन तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप कर ऊनोदर भाई, पावें जग में प्रभुताई।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 2।।

ॐ ह्रीं ऊनोदर तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

होते मुनि रस के त्यागी, निज आतम के अनुरागी।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 3।।

ॐ ह्रीं रस परित्याग तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विविक्त शैय्याशन पावें, तपकर वे कर्म खिपावें।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 4।।

ॐ ह्रीं विविक्त शैयाशन तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मुनि काय क्लेश के धर ज्ञानी, तप धारें जग कल्याणी।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 5।।

ॐ ह्रीं काय क्लेश तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप व्रत संख्यान जो पावें, वे कर्म जयी कहलावें।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 6।।

ॐ ह्रीं व्रत संख्यान तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो प्रायश्चित्त तप करते, वे अपने पातक हरते।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 7।।

ॐ ह्रीं प्रायश्चित तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

वैयावृत्ती तप धारी, होते हैं करुणाकारी।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 8।।

ॐ ह्रीं वैयावृत्ती तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विनय सुतप को धारें, वे मुक्ती मार्ग सम्हारें।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 9।।

ॐ ह्रीं विनय तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप स्वाध्याय के धारी, मुनि जग के करुणाकारी।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 10।।

ॐ ह्रीं स्वाधयाय तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

व्युत्सर्ग सुतप जो पाते, वे अपने कर्म नशाते।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 11।।

ॐ ह्रीं व्युत्सर्ग तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तप ध्यान करें अविकारी, मुनिवर जो हैं अनगारी।
हम जम्बुस्वामि को ध्यायें, पद सादर शीश झुकायें।। 12।।

ॐ ह्रीं ध्यान तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

यह द्वादश तप जो पावें, वे अपने कर्म नशावें।
हम जम्बुस्वामि को ध्याते, पद सादर शीश झुकाते।। 13।।

ॐ ह्रीं द्वादश तप प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

चतुर्थ वलयः

दोहा – दोष अठारह से रहित, हुए आप भगवान।
जम्बू स्वामि को पूजते, पाने शिव सोपान।।

।। चतुर्थ वलयोपरि पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

अष्टादश दोष निवारक
(चाल छन्द)

जो क्षुधा दोष के धारी, वह जग में रहे दुखारी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 1।।

ॐ ह्रीं क्षुधा दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो तृषा दोष को पाते, वह अतिशय दुःख उठाते।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 2।।

ॐ ह्रीं तृषा दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो जन्म दोष को पावें, मरकर के फिर उपजावें।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 3।।

ॐ ह्रीं जन्म दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है जरा दोष भयकारी, दुख देता है जो भारी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 4।।

ॐ ह्रीं जरा दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो विस्मय करने वाले, प्राणी हैं दुखी निराले।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 5।।

ॐ ह्रीं विस्मय दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है अरति दोष जग जाना, दुखकारी इसको माना।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 6।।

ॐ ह्रीं अरति दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्रम करके जग के प्राणी, बहु खेद करें अज्ञानी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 7।।

ॐ ह्रीं खेद दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

है रोग दोष दुखदायी, सब कष्ट सहें कई भाई।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 8।।

ॐ ह्रीं रोग दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जब इष्ट वियोग हो जाए, तब शोक हृदय में आए।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 9।।

ॐ ह्रीं शोक दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

मद में आकर के प्राणी, करते हैं पर की हानी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 10।।

ॐ ह्रीं मद दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जो मोह दोष के नाशी, होते हैं शिवपुर वासी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 11।।
ॐ ह्रीं मोह दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
भय सात कहे दुखकारी, जिनकी महिमा है न्यारी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 12।।
ॐ ह्रीं भय दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
निद्रा से होय प्रमादी, करते निज की बरबादी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 13।।
ॐ ह्रीं निद्रा दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
चिन्ता को चिता बताया, उससे ही जीव सताया।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 14।।
ॐ ह्रीं चिन्ता दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
तन से जब स्वेद बहाए, जो भारी दुख पहुँचाए।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 15।।
ॐ ह्रीं स्वेद दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
है राग आग सम भाई, जानो इसकी प्रभुताई।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 16।।
ॐ ह्रीं राग दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
जिसके मन द्वेष समाए, वह भारी क्षति पहुँचाए।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 17।।
ॐ ह्रीं द्वेष दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
हैं मरण दोष के नाशी, वह होते शिवपुर वासी।
अपना यह दोष नशाए, श्री जम्बुस्वामि कहलाए।। 18।।
ॐ ह्रीं मरण दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा– दोष अठारह से रहित, जम्बूस्वामि जिनेश।
जिनकी अर्चा कर विशद, पायें सुपद विशेष।। 19।।
ॐ ह्रीं अष्टादस दोष रहिताय श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचम वलयः

केवलज्ञान एवं देवोंकृत अतिशय

(छन्द चाल)

होवे सुभक्षिता भाई, सौ योजन में सुखदायी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 1।।
ॐ ह्रीं गव्यूतिशत्चतुष्टय सुभिक्षत्व सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।
हो गगन गमन शुभकारी, इस जग में मंगलकारी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 2।।
ॐ ह्रीं आकाशगमन सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
प्रभु के मुख चार दिखावें, भवि प्राणी दर्शन पावें।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, हम पावन ये अतिशय पाते।। 3।।
ॐ ह्रीं चतुर्मुख सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
होते अदया के त्यागी, तीर्थकर जिन बड़भागी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 4।।
ॐ ह्रीं अदयाभाव सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
उपसर्ग नहीं हो पावें, जब केवल ज्ञान जगावें।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 5।।
ॐ ह्रीं उपसर्गाभाव सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
ना होते कवलहारी, केवल ज्ञानी अनगारी।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 6।।
ॐ ह्रीं कवलाहार सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
प्रभु सब विद्याएँ पाए, ईश्वर अतएव कहावे।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 7।।
ॐ ह्रीं विद्येश्वरत्व सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
नख केश वृद्धि ना पाते, जब केवल ज्ञान जगाते।।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 8।।
ॐ ह्रीं समान नखकेशत्व सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्व.।
अनिमिष दृग पावें स्वामी, प्रभु होते अन्तर्यामी।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 9।।
ॐ ह्रीं अक्ष स्पंदरहित सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वा.।
ना पड़ती जिन की छाया, है केवल ज्ञान की माया।
प्रभु केवल ज्ञान जगाते, पावन ये अतिशय पाते।। 10।।
ॐ ह्रीं छायारहित सहजातिशय सहित श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

देवकृत चौदह अतिशय

(पाइता–छन्द)

है अर्ध मागधी भाषा, सुरकृत है शुभ परिभाषा।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।

प्रभु चौदह अतिशय पाये, जो देवों कृत कहलाए।
हे तीर्थंकर! पदधारी, हम पूजा करें तुम्हारी।। 1।।

ॐह ींस र्वार्धमागधीभ ाषाद ेवोपनीतातिशयध ारकश्र ीज म्बूस्वामीि जनेन्द्रायअ र्घ्यं न.स्व.।

जीवों में मैत्री जागे, जिनभक्ति में मन लागे।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 2।।

ॐह ींस र्वमैत्रीभावद ेवोपनीतातिशयध ारकश्र ीज म्बूस्वामीि जनेन्द्रायअ र्घ्यं नर्व.स् वाहा।

षट्ऋतु के फल फलते हैं, अरु फूल स्वयं खिलते हैं।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 3।।

ॐ ह्रीं सर्वर्तुफलादि तरुपरिणाम देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दर्पण सम भूमि चमकती, सूरज सी कांति दमकती।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 4।।

ॐह ींअ ादर्शत लप्रतिमाद ेवोपनीतातिशयध ारकश्र ीज म्बूस्वामीि जनेन्द्रायअ र्घ्यं न.स्व.।

सुरभित शुभ वायु चलती, जन–जन की वृत्ति बदलती।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 5।।

ॐ ह्रीं सुगंधित विहरण मनुगत वायुत्व देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सब जग में आनंद छावे, हर प्राणी बहु सुख पावे।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 6।।

ॐ ह्रीं सर्वानंद कारक देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.स्व.।

कंटक से रहित जमीं हो, दोषों की वहाँ कमी हो।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 7।।

ॐ ह्रीं वायुकुमारोपशमित देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

नभ में गूंजे जयकारा, जीवों में सौख्य अपारा।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 8।।

ॐ ह्रीं आकाशे जय–जयकार देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो गंधोदक की वृष्टी, सौभाग्य मई सब सृष्टी।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 9।।

ॐ ह्रीं मेघकुमार कृत गंधोदक वृष्टि देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

सुर पग तल कमल रचाते, प्रभु के गुण मंगल गाते।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 10।।

ॐ ह्रीं चरण कमल तल रचित स्वर्णकमल देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

हो गगन सुनिर्मल भाई, यह प्रभू की है प्रभुताई।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 11।।

ॐ ह्रीं शरद कमल वन्निर्मल गगन देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्मल हो सभी दिशाएँ, जिनवर जहाँ शोभा पाएँ।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 12।।

ॐ ह्रीं सर्वानंदकारक देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि. स्व.।

सुर धर्मचक्र ले आवे, आगे जो चलता जावे।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 13।।

ॐह ींध र्मचक्रच तुष्टयद ेवोपनीतातिशयध ारकश्र ीज म्बूस्वामीि जनेन्द्रायअ र्घ्यं न.स् व.।

वसु मंगल द्रव्य सुहावन, लाते हैं सुर अति पावन।
जो है भविजन सुखकारी, यह देवों की बलिहारी।।
प्रभु चौदह.....।। 14।।

ॐह ींअ ष्टम ंगलद्रव्यद ेवोपनीतातिशयध ारकश्र ीज म्बूस्वामीि जनेन्द्रायअ र्घ्यं न.स् व.।

दोहा – दस अतिशय प्रभु ज्ञान के, देवोंकृत शुभकार।
चौदह पाये आपने, पावन मंगलकार।। 15।।

ॐ ह्रीं चर्तुदश देवोपनीतातिशय धारक श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

जयमाला

दोहा – भवि जीवों के लोक में, बने आप प्रतिपाल।
जम्बूस्वामी की विशद, गाते हम जयमाल।।

(ज्ञानोदय छन्द)

भरत क्षेत्र के मगध देश में, राजगृही नगरी पावन।
वीर निर्वाण सम्वत् के भाई, पहले बाइस वर्ष पहचान।।
अर्हद्दास की गृहणी जिनमति, देखी स्वप्न सुमंगल कार।
जम्बूवृक्ष फलों से संयुत, जिसने देखा अति मनहार।। 1।।
द्वितिय स्वप्न देखती माता, निर्धूम अग्नी जले महान।
खेत धान्य का हरा भरा है, कमल युक्त सागर भी मान।।
और तरंगो युत समुद्र है, पंचम स्वप्न रहा यह जान।
स्वप्नों का फल ज्योतिष वेत्ता, बतलाए यह ससम्मान।। 2।।
प्रथम स्वप्न का फल यह गाया, सुत होगा कामदेव समान।
कर्म रूप ईधन का नाशी, पावन होगा लक्ष्मीवान।।
भव्यों का संताप विनाशी, पाएगा जो पद निर्वाण।
फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा प्रातः, बालक जन्मा अतिशय वान।। 3।।
जन्म से शुभ लक्षण का धारी, पावन था जो बहु गुणवान।
युवा अवस्था में हाथी को, वश में किया जो कर संग्राम।।
रत्न चूल विद्याधर राजा, किए पराजित जिसे कुमार।
रक्षक बने प्रजा के पावन, जन–जन का कीन्हे उपकार।। 4।।
गुरु सुधर्म की सुनी देशना, जाना यह संसार असार।
द्वादश अनुप्रेक्षा का चिन्तन, किए स्वयं ही बारम्बार।।
मात–पिता का आग्रह पाके, कन्याएँ परणाए चार।
ब्याह के दूजे दिन हम, दीक्षा लेंगे वचन कहे सुकुमार।। 5।।
स्वजन परिजन सब समझाए, वधुएँ समझा मानी हार।
विद्युत चोर भी चर्चा सुनकर, माना यह संसार असार।।
प्रातः होते दीक्षा धारे, चोर कुँवर भी सह परिवार।
चौबिस वर्ष की आयू पाए, वीर निर्वाण दो था शुभकार।। 6।।
राजगृही जिनदास सेठ के, गृह में लिए प्रथम आहार।
सुतप किए दश वर्ष पूर्ण, श्रुत प्रगटाए प्रभु मंगलकार।।
ज्येष्ठ शुक्ल साते निर्वाण, शुभ तेइस को पाए केवलज्ञान।
वी.निर्वाण बासठ मथुरा के, उपवन से पाए निर्वाण।। 7।।

दोहा – दिवस घड़ी भू धन्य है, धन्य भी हुई समाज।
श्री जम्बू जिनराज की, पूजा की शुभ आज।।

ॐ ह्रीं श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा – भाव सहित अर्चा करें, जिन पद बालाबाल।
मुक्ती पथ हम भी विशद, पाएँ हे प्रतिपाल!।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलि क्षिपेत् ।।

भजन

आज तो बधाई अर्हद्दास के दरबार जी।
जिनमति माँ ने ललना जायो।
जायो जम्बु कुमार जी। आज तो..........
राजगृही मे उत्सव कीनो, घर–घर मंगलाचार जी।
घनन–घनन घन घंटा बाजे, देव करे जयकार जी।। 1।।
आज तो..........
नर–नारी मिल चौक पुरायें, भर–भर मोतियन थाल जी।
नगर सरीखा पट्टन दीना, खुशियाँ हुई अपार जी।। 2।।
आज तो..........
हाथी दीनो, घोड़ा दीनो, दीने रत्न भंडार जी।।
हाथ जोड़ सब करें वीनती, प्रभु जीवें चिरकाल जी।। 3।।
आज तो..........
कर्म घातिया नाश कियें प्रभु, पाये ज्ञान अपार जी।
मथुरा चौरासी में आके, पाये मोक्ष सम्राज्य जी।। 4।।
आज तो..........
भक्त प्रभू की पूजा करके, बोलें जय–जयकार जी।
''विशद''भाव से जिनपद वंदन, करते बारंबार जी।। 5।।
आज तो..........

श्री जम्बूस्वामी जी चालीसा

दोहा – वन्दू मैं नवदेवता, चौबीसों जिनराज।
चालीसा पढ़ते यहाँ, जम्बु स्वामि का आज।।

(चौपाई)

जय–जय–जय श्री जम्बूस्वामी, आप हुए मुक्ती पथ गामी।। 1।।
ऊर्ध्व अधो के मध्य बताया, मध्यलोक थाली सम गाया।। 2।।
जम्बूद्वीप रहा शुभकारी, भरत क्षेत्र जिसमें मनहारी।। 3।।
मध्य में आर्य खण्ड शुभ गाया, जिसमें भारत देश बताया।। 4।।
मगध देश जिसमें शुभ जानो, राजगृही नगरी पहचानो।। 5।।
बिम्बसार श्रेणिक नृप गाए, क्षायिक सम्यक्त्वी कहलाए।। 6।।
श्रोता मुख्य वीर के भाई, हुए लोक में मंगलदायी।। 7।।
आप प्रजा वत्सलता धारी, जैन धर्म के बने पुजारी।। 8।।
अर्हद्दास सेठ कहलाए, नगर श्रेष्ठि जो पावन गाए।। 9।।
गृहणी जिनकी जिनमति गाई, धर्म परायण जो कहलाई।। 10।।
पूर्व भवों में पुण्य जगाए, पंचम स्वर्ग से चयकर आए।। 11।।
मात–पिता को धन्य बनाए, चरम शरीरी जो सुत पाए।। 12।।
जन्म आपने जिस दिन पाया, हर्ष नगर मे भारी छाया।। 13।।
जम्बु कुमार आप कहलाए, लक्षण रूप सुगुण कई पाए।। 14।।
लघु वय में तुम राज्य सम्हारे, रत्न चूल खग तुमसे हारे।। 15।।
नृप मृगांक की कन्या भाई, विशालवती जो आप बचाई।। 16।।
गुरु सुधर्म ऋषिराज कहाए, राजगृही नगरी में आए।। 17।।
धर्म का जो उपदेश सुनाए, अस्थिर भोग संयोग बताए।। 18।।
सुन कुमार वैराग्य जगाए, मात–पिता के पास में आए।। 19।।
उनसे अपनी बात सुनाई, यह संसार रहा दुखदायी।। 20।।
व्रत संयम हमको भी पाना, गृह जंजाल छोड़ वन जाना।। 21।।
मात–पिता ने ब्याह की ठानी, बात कुंवर ने उनकी मानी।। 22।।
बधुएँ चार विनय श्री जानो, रूप–कनक–पद्म श्री मानो।। 23।।
कुँवर को जिनने बहुत रिझाया, किन्तू चली ना कोई माया।। 24।।
विद्युत चोर वहाँ पर आया, वार्ता सुन वैराग्य जगाया।। 25।।
सुन वैराग्य मयी वार्ताएँ, नहीं कौन वैराग्य ना पाएँ।। 26।।
मात–पिता चारों ललनाएँ, सब वैराग्य भावना भाएँ।। 27।।
जैनेश्वरी सब दीक्षा धारी, तन–मन से होके अविकारी।। 28।।
वज्र वृषभ संहनन के धारी, जम्बू स्वामी हो अनगारी।। 29।।
निज आतम का ध्यान लगाए, कर्म घातियाँ आप नशाए।। 30।।
पावन केवल ज्ञान जगाए, दिव्य देशना आप सुनाए।। 31।।
अड़तिस वर्ष काल तक स्वामी, जग कल्याण किए जग नामी।। 32।।
कर विहार मथुरा में आए, अपने सारे कर्म नशाए।। 33।।
वर्ष चुरासी आयू पाए, चौरासी का चक्र नशाए।। 34।।
चौरासी यह क्षेत्र कहाए, मथुरा नगरी में यह आए।। 35।।
प्रभु अनुबद्ध केवली गाए, अन्तिम यहाँ से शिव पद पाए।। 36।।
मन्दिर बना यहाँ मनहारी, अजितनाथ का मंगलकारी।। 37।।
जम्बूस्वामि की प्रतिमा प्यारी, शोभा पावें जो अविकारी।। 38।।
प्रकट हुई भू से प्रतिमाएँ, जिनके दर्शन यात्री पाएँ।। 39।।
''विशद''सभी सौभाग्य जगाएँ, बार–बार जिन दर्शन पाएँ।। 40।।

दोहा – चालीसा चालीस दिन, पढ़ें भाव से जीव।
जाप करें जो धूप दे, पावें पुण्य अतीव।।
सुख शांती सौभाग्यमय, जीवन होय महान।
अनुक्रम से वे पाऐंगे, पावन पद निर्वाण।।

जाप : ॐ ह्रीं मथुरा चौरासी स्थले मुक्ति प्राप्त श्री जम्बूस्वामी जिनेन्द्राय नमः।

भजन

भक्ति में झूमे नाचे, धर्मालू आए हैं।
जम्बूस्वामि तव दर्शन को, श्रद्धालू आए हैं।। टेक।।
अनुबद्ध केवली गाए, जो मुक्ति श्री को पाए।
हम करते हैं गुणगान, प्रभु ये दयालु पाए हैं।।
जम्बू स्वामि तव दर्शन को, श्रद्धालू आए हैं।।1।।
हे मोक्ष मार्ग के नेता!, कर्मों के आप विजेता।
प्रभु करने तव गुणगान, टोलियाँ लेकर आए हैं।।
जम्बू स्वामि.... ।। 2।।
तुम अतिशय कई दिखाए, कई भक्त शरण में आए।
जो पूजा करके नाथ सुफल, इच्छित वे पाए हैं।।
जम्बू स्वामि..... ।। 3।।
जो शरण आपकी आया, उसने इच्छित फल पाया।
हम जोड़ी आपसे डोर, जो ये कृपालु पाए हैं।।
जम्बू स्वामि........ ।। 4।।
अब दया भक्त पे कीजे, प्रभु चरण शरण में लीजे।
हम ''विशद''भावना लेकर के, तव चरणों आए हैं।।
जम्बू स्वामि..... ।। 5।।

श्री जम्बूस्वामी जी की आरती

(तर्ज-आओ बच्चो तुम्हे दिखाए झांकी हिन्दुस्तान...)

जगमग–जगमग आरति कीजे, श्री जम्बू जिनराज की।
कर्म नाश कर मुक्ती पाए, तारण–तरण जहाज की।।
वन्दे जिनवरम्–वन्दे जिनवरम्–2।। टेक।।
राजगृही में अरहद्दास के, गृह में प्रभु ने जन्म लिया।
सेठानी जिनमति माता को, प्रभू आपने धन्य किया।।
महिमा फैलाई प्रभु तुमने, जैन धर्म के ताज की।
जगमग–जगमग आरति कीजे, श्री जम्बू जिनराज की।। 1।।
मात–पिता का आग्रह पाके, तुमने ब्याह रचाया जी।
मात–पिता चारों वधुओं ने, जिन्हे खूब समझाया जी।।
विजय अन्त में हुई वहाँ पर, वीतराग आगाज की।
जगमग–जगमग आरति कीजे, श्री जम्बू जिनराज की।। 2।।
महाव्रतों को पाके तुमने, पावन संयम पाया जी।
कर्म घातियाँ नाश के तुमने, केवल ज्ञान जगाया जी।।
चौरासी मथुरा से मुक्ती, धारी श्री जिनराज की।।
जगमग–जगमग आरति कीजे, श्री जम्बू जिनराज की।। 3।।
दूर–दूर से श्रावक आके, प्रभु के दर्शन पाते हैं।
''विशद'' भाव से अर्चा करके, निज सौभाग्य जगाते हैं।।
धन्य हुआ है दिवस आज का, धन्य घड़ी शुभ आज की।
जगमग–जगमग आरति कीजे, श्री जम्बू जिनराज की।। 4।।
हर्षित होके प्रभू आपकी, आरति करने आए हैं।
मानव गति में जन्म लिया है, जैन धर्म अपनाए हैं।।
विश्व शांति का नारा गूँजे, विनती सकल समाज की।
जगमग–जगमग आरति कीजे, श्री जम्बू जिनराज की।। 5।।

''मथुरा चौरासी के मूलनायक श्री अजितनाथ भगवान का अर्घ्य''

पुण्य प्रभा श्री अजितनाथ की, क्षेत्र चौरासी में बिखरे।
जिनका ध्यान जाप अर्चा कर, भव्यों का जीवन निखरे।।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाकर, चढ़ा रहे जिन पद अभिराम।
विशद भाव से श्री चरणों में, करते बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री मथुरा चौरासी सिद्धक्षेत्र स्थित मूलनायक श्री अजितनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

समुच्चय अर्घ्य

अष्टम वसुधा पाने को यह, अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
अष्ट गुणों की सिद्धि पाने, तव चरणों में आए हैं।।
णमोकार नन्दीश्वर मेरु, सोलह कारण जिन तीर्थेश।
सहस्त्रनाम दश धर्म देव नव, रत्नत्रय है पूज्य विशेष।।
देव–शास्त्र–गुरु धर्म तीर्थ जिन, विद्यमान तीर्थंकर बीस।
कृत्रिमा कृत्रिम चैत्य जिनालय, को हम झुका रहे हैं शीश।।

ॐ ह्रीं अर्हं मूलनायक 1008 श्री ....सहित पंचकल्याणक पदालंकृत सर्व जिनेश्वर, नवदेवता, देव-शास्त्र-गुरु, सोलहकारण, रत्नत्रय, दशलक्षण धर्म, पंचमेरु, नन्दीश्वर, त्रिलोक सम्बन्धि समस्त कृत्रिम अकृत्रिम चैत्य चैत्यालय, सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तीस चौबीसी, विद्यमान बीस तीर्थंकर, तीन कम नौ करोड़ गणधरादि मुनिश्वरेभ्यो अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री का अर्घ्य

आदि सागराचार्य गुरू श्री, महावीर कीर्ति जी ऋषिराज।
विमल सिन्धु सन्मति सागर, गुरु भरत सिन्धु पद पूजे आज।।
गणाचार्य श्री विराग सिन्धु के, शिष्य विशद सिन्धु गुरुराज।
पूज्य सभी आचार्यो के पद, शीश झुकाता हूँ मै आज।।

ॐ ह्रीं परम पूज्य आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज सहित परम्परागत सर्व पूर्वाचार्य चरण कमलेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।